IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 22, Issue 11, Ver. 1 (November. 2017) PP 99-103
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

फैशन को प्रभावित करने वाले कारक

डॉ. रश्मि गुप्ता
प्रवक्ता , जी. पी. ई. एम. विभाग , गौरी देवी राजकीय महिला महाविद्यालय, अलवर (राज.) 301001

सारांश
फैशन स्वभाव से एक गतिशील और अल्पकालिक संस्कृति है जो समय और स्थान के साथ बदलती है। वास्तव में स्थायी वस्तुओं की बात करें तो पृथ्वी पर शायद ही ऐसी कोई वस्तु हो जिसमें ऐसा गुण हो, सब कुछ निरन्तर बदलता रहता है। क्योंकि मानव मन भी इसी ग्रह का एक हिस्सा है; इसलिए वह रहने की जगह, भोजन और निश्चित रूप से कपड़े या फैशन के क्षेत्र में भी बदलाव की तलाश करता है। लोग नया स्टाइल और नया फैशन चाहते हैं। जब भी हम कुछ अच्छा पहनते हैं तो हमारा आत्मविश्वास अपने आप बढ़ जाता है और हमें अच्छा भी महसूस होता है। तरह–तरह के कपड़ों के खूबसूरत रंग हमें बहुत आकर्षित करते हैं और हमारा मूड भी बदल देते हैं। हम एक जैसी चीजों से बोर हो जाते हैं, लेकिन फैशन हमेशा बदलता रहता है। यह नए रंगों और नई शैलियों को आजमाने में मदद करता है। अतः इस शोध पत्र में फैशन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया गया।
मुख्य बिन्दु :– फैशन का अर्थ , प्रभावित करने वाले कारक , सामाजिक कारक , आर्थिक कारक , तकनीकी कारक , राजनीतिक व कानूनी कारक , फैशन के बाधक तत्व एवं निष्कर्ष ।

परिचय :–

मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएं भोजन , वस्त्र ,और आश्रय है स लोग कपड़ों का उपयोग धन ,अवस्था ,आयु ,अवसर और लिंग आदि को व्यक्त करने के लिए करते है स "फ़ैशन" शब्द सभी को आकर्षित करता है। सरल शब्दों में इसकी व्याख्या करें तो यह मूल रूप से सत्तारूढ़ प्रवृत्तियों या अपनी स्वयं की व्यक्तिगत वरीयताओं के अनुसार कपड़े, सामान और गहने पहनने की शैली है। फैशन, संक्षेप में, एक साधारण पोशाक को इस तरह पहनने की कला है कि इंसान सुंदर और सुशोभित दिखे।

फैशन स्टाइलिश कपड़े या सामान आदि पहनने के बारे में ही नहीं है यह पहले किसी विशेष व्यक्ति या जगह पर अवसर, संस्कृति और शैली को समझने के लिए भी है और फिर उसके अनुसार पोशाक को पहनने की अनुमति देता है। इस प्रकार फैशन डिजाइनर कपड़े डिज़ाइन करने से पहले अवसर, जगह, सामग्री और कई अन्य चीजों का अध्ययन करने के लिए बहुत समय लेते हैं। उन्हें कपड़े डिज़ाइन करने से पहले व्यक्ति के आकार, वजन, ऊंचाई और रंग के लिए विशेष रूप से तकनीक का उपयोग करना, सिलाई पद्धति, कपड़े आदि पर विचार करना होता है।

पहले के दिनों में फैशन का इस्तेमाल अक्सर समृद्धि और सुंदरता का प्रतीक होता था लेकिन आज फैशन हर घर तक पहुंच गया है और फैशन से सोच में काफी बदलाव आया है क्योंकि यह कपड़े पहनने और सुंदर दिखने से कही अधिक है चाहे आप किसी भी तरह के कपड़े पहनते हों।

संक्षेप में कहे तो फैशन हमारे जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है। इस प्रकार यह तर्क देने के बजाए कि फैशन या नवीनतम रुझान हमारी संस्कृति के लिए अच्छा या बुरा है यह नए फैशन नियमों को अपनाने और अपने आप में एक ऐसी चीज़ बनाना है जो एक साथ फैशनेबल और सभ्य होती हो स

फैशन या कपड़ों के चयन पर प्रभाव डालने वाले निम्न कारक हैं

1. सामाजिक कारकः–

प)वह स्थान जहां व्यक्ति रहता है (शहरी या ग्रामीण):–

उस क्षेत्र और स्थान के आधार पर व्यक्ति कपडे के पेत्तेर्ण ,आकार ,शैली को बदलता है स शहरी क्षेत्रों में लोगों के विभिन्न वर्गों के बीच बहुत करीबी सांस्कृतिक संपर्क के कारण कपड़ों का पैटर्न और शैली फैशन से प्रभावित होता है , शहरी क्षेत्र में भागदौड़ की जिंदगी होती है अतः वहां के वस्त्र इस तरह के होते है जो उनकी कार्य शैली में व्यवधान न डालते हों जैसे की बिना दुपट्टे के परिधान या चुस्त वस्त्र स लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में कपडे क्षेत्रीय कारकों से प्रभावित होते है स वहां के परिधान उस क्षेत्र की संस्कृति या वातवरण के अनुसार होती है स

पप) व्यक्ति की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि :–

दूसरा कारक जिसने कपड़ों के चयन पर प्रभाव डाला है वह व्यक्ति की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और व्यक्ति की परवरिश का वातावरण है स जैसे राजस्थान में घगरा चोली , पुरुषों में धोती कुरता तथा पगड़ी ,पंजाब में सूट , महाराष्ट्र में गाँधी टोपी , पैठनी साडी आदि स

पपपप)लिंग :–

आधुनिक समाज लैंगिक पूर्वाग्रह में विश्वास नही करता है और इसका विरोध भी करता है , लेकिन फिर भी परिधान में हम सभी अभी भी पुरुष और महिला में अंतर बनाए रखने में सहज महसूस करते है स

पअ)व्यवसाय :–

मनुष्य के कपड़ों का चयन उसके व्यवसाय पर निर्भर करता है स इसी कारण से हम एक पुलिस , आर्मी ,डॉक्टर , नर्स और आम आदमी में अंतर कर पाते है स

अ)अवसर :–

आमतौर पर चुनिन्दा कपडे विशेष अवसर पर औपचारिक रूप से पहने जाते है स आफिस में लोग फॉर्मल ड्रेस पहनते है और इत्मिनान के समय कैजुअल वियर पहनते है स किसी शादी या फंक्शन में चमकदार वस्त्रों का प्रयोग किया जाता है स

अप) सामाजिक स्थिति :–

इन्सान हमेशा कपड़ों के माध्यम से अपनी सामाजिक स्थिति दिखाने के लिए इच्छुक रहता है ,इसलिए अतीत में राजा हमेशा शाही कपडे पहनते थे स अमीर ,गरीब को वस्त्रों के माध्यम से पहचाना जा सकता है स

अपप) बढ़ता खाली समय :–

प्राचीन समय में तकनिकी का अविष्कार इतना नही था जिसके कारण सभी को हाथों से कार्य करना पड़ता था , और उनका पूरा समय कार्य करने में ही निकल जाता था स परन्तु आज हर कार्य के लिए मशीन का आविष्कार हो गया है जिस से कार्य आसानी से बिना थकान के कम समय में ही हो जाता है और लोगों के पास समय खाली बचने लगा है स अब लोग अपने खाली समय मे फैशन की तरफ ध्यान देने लगे है स

अपपप) समाज में औरतों की स्थिति :–

प्राचीन समय में स्त्रियाँ घर पर ही रह कर केवल घर के ही काम करती थी , उनको उनके परिवार की संस्कृति के अनुसार ही वस्त्र पहनने होते थे स परन्तु आज के समय में स्त्रियाँ पढ़ी लिखी होने के साथ साथ आत्मनिर्भर भी हो गई है और अपना खर्च स्वयं उठा सकती है अतः वो अपनी आवश्यकता के अनुसार फैशन पर खर्च कर सकती है जिससे फैशन को बढ़ावा मिलता है स

प•)शिक्षा का बढ़ता स्तर :

शिक्षा का स्तर बढ़ने के साथ साथ लोगों को बहुत सी जानकारियां मिलती रहती है वो अपनी आवश्यकता के अनुसार घर , बाहर , ऑफिस, विभिन्न उत्सव आयोजनों के लिए अलग अलग पहनावे का प्रयोग करते है जो फैशन को बढ़ावा देता है स

•) सामाजिक स्वीकृतिः

आज के आधुनिक समय में आप चाहे पाश्चात्य संस्कृति के या किसी भी आधुनिक फैशन के परिधान पहनते है समाज उसको स्वीकृत करता है , आज हर उम्र के लोग बदलते वक्त के साथ खुद को बदल चुके है , ये समाज की स्वीकृति फैशन को बढ़ावा देती हैद्य

2. आर्थिक कारक

प)सामाजिक आर्थिक स्थिति :–

अर्थशास्त्र के कारकों में महत्वपूर्ण घटक समाज की आर्थिक स्थिति , व्यक्ति की आर्थिक स्थिति ,प्रोद्योगिकी और कच्चे माल की उपलब्धता है स अगर समाज की आर्थिक स्थिति में बदलाव आता है तो इसका असर कपड़ों पर पड़ता है स हम जानते हैं की गरीब और अमीर लोगों के पैटर्न अलग अलग होते है , लोग उन्ही कपड़ों का चयन करते हैं जिनको वे वहन कर सकते है स कुछ लोग अपनी आर्थिक स्थिति को दिखने के लिए कपड़ों का चयन करते है द्य

कपड़े उद्योग पर आर्थिक कारकों के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव पड़ सकते हैं। आर्थिक उछाल की अवधि के दौरान, लोगों को अधिक डिस्पोजेबल आय होती है। इसलिए, वे अधिक कपड़े खरीद सकते हैं, कपड़े निर्माताओं, थोक विक्रेताओं और खुदरा विक्रेताओं के लिए बिक्री बढ़ा सकते हैं। हालांकि, मंदी का विपरीत प्रभाव पड़ता है। इन विभिन्न कपड़ों की संस्थाओं के लिए बिक्री काफी कम हो सकती है। नतीजतन, रिटेलर्स बड़ी मात्रा में इन्वेंट्री के साथ फंस सकते हैं। और उन्हें कपड़ों को काफी कम दामों पर बेचना पड़ सकता है। कपड़ों के निर्माताओं और खुदरा विक्रेताओं को अधिक सामान्य ब्रांडों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए कम कीमत के कपड़े ब्रांड बेचने की भी आवश्यकता हो सकती है। जब वे कम डिस्पोजेबल आय रखते हैं तो उपभोक्ता अक्सर सस्ते ब्रांडों की खरीदारी करते हैं।

पप) तकनीकी कारकः–

वस्त्र उद्योग को प्रभावित करने वाले तकनीकी कारकों में संसाधनों की उपलब्धता, मांग और उत्पादन शामिल हैं। खुदरा विक्रेता सूती कपड़ों की कीमतों में वृद्धि कर सकते हैं यदि वे इस कच्चे माल की कमी का सामना करते हैं, क्योंकि उन्हें अपने निर्माताओं को अधिक भुगतान करना होगा। एक प्रतियोगी द्वारा नई कपड़ों की शैलियों की शुरूआत पुराने फैशन से मांग को दूर कर सकती है। इसलिए, एक छोटे कपड़े निर्माता को कुछ कपड़ों के उत्पादन को बंद करने और उपभोक्ताओं की जरूरतों को पूरा करने वाले नए उत्पादन करने की आवश्यकता हो सकती है।

तकनीकी के विकास के कारण कम समय तथा कम मूल्य में अच्छी गुणवत्ता के अधिक से अधिक वस्त्रों का उत्पादन किया जाने लगा है स कंप्यूटर के द्वारा अधिक से अधिक डिजाईन एवं शैलियों में परिधानों का निर्माण कर मांग के अनुसार बाज़ार में तुरंत उपलब्ध करा दिया जाता है जो लोगों को आकर्षित करता है और फैशन को प्रभावित करती है स

इन्टरनेट के विकास के कारण आज हर प्रकार के फैशन के परिधान ऑनलाइन पर खरीदने के लिए उपलब्ध है स

पपप) खरीदारी की बढ़ती क्षमता :–

आज सामान्यता हर घर में अपना सामाजिक स्तर बढ़ने के लिए स्त्री पुरुष दोनों नौकरी करते है ,जिसके कारण उनकी पारिवारिक आय बढ़ गई है स जो फैशन या शैली पहले केवल अमीर या गणमान्य लोग ही पहना करते थे आज मध्यम एवम् निम्न वर्ग के लोग भी खरीदने लगे है जिससे फैशन को बढ़ावा मिलता है स

पअ) विक्रय संवर्धन :–

डिज़ाइनर और निर्माता बाज़ार में अपने बनाये परिधानों के डिजाईन और शैली को बहुत ही आकर्षक तरीके से प्रस्तुत करते है जिसके प्रचार से प्रभावित होकर उपभोक्ता अधिक से अधिक उस फैशन को खरीदता है स आज बहुत से राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय फैशन डिज़ाइनर प्रतिस्पर्धा में नए नए विक्रय संवर्धन के तरीके अपनाते है जिससे फैशन को बढ़ावा मिलता है

3.कानूनी और राजनीतिक कारक :–

कपड़ों के उद्योग में कई कानूनी और राजनीतिक कारक छोटे व्यवसायों को प्रभावित करते हैं। श्रमिकों के अधिकारों और बाल श्रम कानूनों जैसे मुद्दों से उद्योग बार–बार प्रभावित हुआ है। कपड़ों के विनिर्माण संयंत्रों में संघ कार्यकर्ता अपने नियोक्ताओं को चुन सकते हैं, खासकर अगर उनकी मजदूरी या चिकित्सा लाभ अन्य श्रमिकों की तुलना में कम हैं। श्रमिक अपने कपड़ों के नियोक्ताओं को चुनकर उत्पादन पर असर डालते हैं। यह खुदरा विक्रेताओं के लिए समय पर फैशन में गिरावट का कारण बन सकता है। कंपनियों द्वारा नियोजित नहीं किए जाने वाले एक्टिविस्ट खुदरा विक्रेताओं को भी चुन सकते हैं, जो बाल श्रम कानूनों का उल्लंघन करने वाले देशों से कपड़े खरीदते हैं। यह नकारात्मक प्रचार छोटे कपड़ों की खुदरा विक्रेताओं की बिक्री और मुनाफे को प्रभावित कर सकता है। इसके अलावा, एक अन्य कंपनी के आयात के खिलाफ एक व्यापार कपड़े थोक विक्रेताओं को विभिन्न आपूर्तिकर्ताओं को खोजने के लिए मजबूर करेगा।

4. पर्यावरणीय कारकः–

प)वातावरणीय स्तिथि :– आज विभिन्न डिज़ाइनर एवम निर्माता प्रतिस्पर्धा में अलग अलग मौसम , वातावरण के परिधान बाज़ार में प्रदर्शित करते है जो की अलग अलग फैशन शैली में होते है ,और उपभोक्ता को आकर्षित करते है तथा फैशन को बढ़ावा देते है स

पप)चरम स्थितियों से सुरक्षाः–

पर्यावरणीय कारकों की स्थिति बहुत अधिक ठंड , बहुत अधिक गर्मी ,बारिश , ठंडी हवा आदि शामिल होते है स हम चरम पर्यावरण , असमान्य स्थानों (अंतरिक्ष या पानी के नीचे) से सुरक्षा लेने के लिए कपड़ों का चयन करते है स पर्यावरण की स्थिति में बदलाव होते ही कपड़ों का चयन बदल जाता है स इस कारक में एक व्यक्ति जलवायु परिस्थितियों में एक ही कपडे का उपयोग नही करेगा स जलवायु के तापमान पर निर्भर करता है की कपड़ों को मोटे तौर पर सर्दियों और गर्मियों में पहने जाने वाले कपड़ों में विभाजित किया जाता है स

5. शारीरिक कारक :–

इस कारक में व्यक्ति की उम्र , शरीर की संरचना ,शरीर की शारीरिक प्रतिक्रिया ,गतिविधि स्तर आदि शामिल है स कपड़ों के पैटर्न और आवश्यकता समय के साथ शारीरिक परिवर्तनों के साथ बदल जाते है जैसे दृ एक छोटे बच्चे को अलग प्रकार के कपड़ों की आवश्यकता होती है , और एक उम्र के व्यक्ति को अलग प्रकार के कपड़ों की जरुरत होती है स कपड़ों का चयन व्यक्ति केशारीरिक स्वास्थ्य पर भी निर्भर करता है ,जिस व्यक्ति के शरीर का एक विशेष निर्माण होता है उसे एक अलग तरह के कपडे की आवश्यकता होती है स

व्यक्ति की शारीरिक क्रियाओं का भी फैशन पर प्रभाव पड़ता है , खेलते वक्त खिलाडी चुस्त कपडे पहनते है ,जिससे उनके खेल में कोई उलझन न हो स गर्भवती स्त्री की वस्त्रों की आवश्यकता अलग हो जाती है स रात को पहनने वाले वस्त्र ढीले होते है स

6. उपभोक्ता कारक :–

उपभोक्ता कारकों में संस्कृतियों, मानदंड, जीवन शैली, जनसांख्यिकी और जनसंख्या परिवर्तन शामिल हैं। ये कारक कपड़े उद्योग को विभिन्न तरीकों से प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, एक छोटे कपड़े निर्माता को उन शैलियों को बनाने की आवश्यकता होती है जो विभिन्न संस्कृतियों के लोगों से अपील करते हैं, खासकर यदि वे सांस्कृतिक समूह अपने बाजार के बड़े पर्याप्त क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसके विपरीत, कपड़े निर्माता, थोक व्यापारी और खुदरा विक्रेता बहुत सारे कपड़ों की वस्तुओं को बनाने से बचते हैं जो 100 साल पहले पहनी जाने वाली शैलियों जैसे समाज के मानदंडों के हैं। उम्र बढ़ने की आबादी बड़े जींस और पैंट के आकार की मांग को बढ़ा सकती है, जैसे कि आराम से या ढीले–ढाले स्टाइल। आमतौर पर, कई लोग अपने 40 और 50 के दशक में आने पर अधिक आरामदायक वस्त्रों को चुनते है स इसके अलावा, कुछ क्षेत्रों में जन्म दर में कमी से बच्चे के कपड़े की मांग कम हो जाएगी।

7.परिधानों की अधिक विविधताः–

आज बहुत से फैशन डिज़ाइनर हो गए है जो अपने डिजाईन एवं शैली की तरफ लोगों को आकर्षित करने के लिए उपभोक्ताओं की आवश्यकता के अनुसार अधिक आरामदायक और अधिक से अधिक डिजाईन में विवधता लाकर अपने परिधानों को बाज़ार में लाते है जो फैशन को बढ़ावा देता है

फैशन के बाधक तत्व

फैशन जितनी जल्दी अपनी ऊँचाइयों पर पहुँचता है उतनी ही जल्दी उसका पतन हो जाता है ,बहुत से कारक फैशन का विस्तार करते है तो कुछ तत्व उसके पतन का कारण भी बनते है फैशन के बाधक तत्व :–

1.फैशन चक्र की प्रकृति (दंजनतम वf ïिपवद बलबसम)– पुरुषों का फैशन चक्र औरतों के फैशन चक्र की अपेक्षा अधिक धीरे चलता है , पुरुष प्रधान समाज में वो अपने केवल वही वस्त्र खरीदना चाहते है जो उनकी आवश्यकता की पूर्ति करते हो इसके कारण महिलाओं की खरीदने की क्षमता भी कम हो जाती है जिसके कारण फैशन का विस्तार बाधक होता है स

2. नैतिकता का अभाव (ईमदबम वf उवतंसपजल)– कभी कभी बड़े शहरों में वहां की संस्कृति एवं आवश्यकता के अनुसार कोई फैशन की उत्पत्ति होती है ,परन्तु जब वही फैशन छोटे स्थान या ऐसी जगह पर जाता है जहाँ उसी फैशन को समाज अमर्यादित या अनैतिक मान कर उसका बहिष्कार कर देते है और उस फैशन का विस्तार बाधित हो जाता है स

3.आदत एवं रिवाज (ीिइपज ंदक बनेजवउ)– बहुत से लोग एक ही प्रकार की शैली को पहनना पसंद करते है , उनके अनुसार वो उनका रिवाज है और उसकी उनको आदत हो चुकी है अतः वो नए फैशन को नही अपना पाते है स ये फैशन के विस्तार को प्रभावित करता है स

4.गरीबी (चवअमतजल)– हमारे देश की अधिकाँश जनता गरीबी की रेखा के नीचे जीवन व्यतीत कर रही है , उनके लिए फैशन से ज्यादा महत्वपूर्ण दूसरी आवश्यकता होती है स अगर वो फैशन में बदलाव भी पसंद करते है तब भी धन की कमी के कारण उनको अपने पुराने वस्त्रों के फैशन से ही संतोष करना पड़ता है जो की फैशन के विस्तार का बहुत बड़ा बाधक होता है

5.क़ानून (सूं)– कुछ विशेष परिधानों के लिए कानून बना होता है जो फैशन को बाधित करता है जैसे की नवजात शिशुओ की ड्रेस अग्नि प्रूफ होनी जरुरी है, ये नियम फैशन के कारण होने वाले बदलाव को बाधित करते है स

6. आलोचना का डर (मिंत व िबतपजपबपेउ)– कुछ लोगों को पुरानी शैली जानी पहचानी और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करती हुई लगती है , नई शैली को अपनाने में उनको सामाजिक आलोचना के शिकार होने का डर रहता है और वो फैशन के बदलाव को अपनाने में हिचकते है ये डर फैशन के विस्तार का बाधक बनता है स

7. विवेकपूर्ण चुनाव (तंजपवदंस बीवपबम)– कई बार फैशन की कोई उपयोगिता नही होती है वो केवल किसी एक अवसर के लिए ही उपयोगी होता है ऐसे में बुद्धिमान व्यक्ति परिधान का चुनाव केवल फैशन पर आधारित न करके उसका विवेकपूर्ण चुनाव करता है स फैशन की उपयोगिता का अभाव ही उसके विस्तार में बाधक होता है स

8.परम्परा के अनुयायी (विससवूमत व जितंकपजपवद)– समाज के कुछ लोग अपनी पुरानी संस्कृति में बदलाव पसंद नही करते उनके अनुसार उनकी संस्कृति उनकी पहचान होती है ,उसमे थोडा सा भी परिवर्तन उनकी संस्कृति पर आंच ला सकता है जिसका वो विरोध करते है और फैशन का विस्तार रुक जाता है स

9. पीढ़ी का अंतर (हमतमतंजपवद हंच)– परिवार के अधिक उम्र के सदस्यों को नये फैशन के परिधान मर्यादित नही लगते और वो उन वस्त्रों का विरोध करते है जिसके कारण फैशन का विस्तार प्रभावित होता है स

10.समूह द्वारा तिरस्कार (तमरमबजपवद इल हतवनच)– फैशन वही सफल होता है जो समूह द्वरा अपनाया जाये परन्तु कई बार किसी शैली या डिज़ाइन को पूरा समूह नापसंद कर उसका तिरस्कार कर देता है और उस फैशन का वहीँ अंत हो जाता है स

11.सामाजिक मूल्यों का अभाव (संबा व िवबपंस अंसनमे)– किसी भी फैशन का विस्तार तभी संभव है जबकि वह सामाजिक मूल्यों के अनुसार हो यदि वह फैशन हमारी रुढियों और क़ानून को तोड़ता है तो उस फैशन को स्वीकृति नही मिल पाती और आगे उसका विस्तार रुक जाता है स

12. कुछ ही वर्ग तक सीमित (सपउपजमक वित मि बसें)– फैशन बहुत जल्दी जल्दी बदलता रहता है और केवल कुछ वर्ग तक ही पहुँच पाता है, निम्न वर्ग के लोग बदलते फैशन के अनुसार अपने परिधान नही बदल पाते और फैशन का विस्तार केवल उच्च वर्ग में ही हो पाता है

निष्कर्ष :–

अध्ययन स्पष्ट है कि इस तरह, फैशन, जो किसी व्यक्ति की समग्र स्थिति और उसकी स्थिति को दर्शाता है, हमारे जीवन और हमारे समाज का अभिन्न अंग है। यह समय के अनुसार प्रभावित होता और बदलता रहता है। संक्षेप में कहे तो फैशन हमारे जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा है। इस प्रकार यह तर्क देने के बजाए कि फैशन या नवीनतम रुझान हमारी संस्कृति के लिए अच्छा या बुरा है यह नए फैशन नियमों को अपनाने और अपने आप में एक ऐसी चीज़ बनाना है जो एक साथ फैशनेबल और सभ्य होती हो स

संदर्भ सूची :–

1ण म्सससपे, ।. ठतववा, व (2004) डवपेजनतम डंदंहमउमदज ठेंम स्लमत च्वसरमबज, च्ंचमत चतमेमदजमक ंज ैनतअपअंस 2004 ब्वदमितमदबम पद स्ममके

2ण भ्.ड. च्मतापदे, म्.ड. ब्वूद, ड्ढ.ठ. त्पहांपे, ठ.ै. म्हहमतजजेवद. ।जजपजनकमे ंदक इमींअपवनतंस पदजमदजपवदे व ि हतपबनसजनतंस ूवतामते जवूंतक कपेचवेंइसम चतवजमबजपअम बवअमतंससे, ब्सवजीपदह ंदक ज्म•जपसम तमेमंतबी रवनतदंसः टवस. 11 (1), थ्ंसस 1992

3ण ।कंउे, ै. ।. ैसवबनउ ।.६ ड्ढमलेमतसपदह, ॅ.ड. । उवकमस वित चतवजमबजपअम बसवजीपदह मिमिबजे वद चमतवितउंदबम. प्दजमतदंजपवदंस श्रवनतदंस व ि बसवजीपदह ेबपमदबम ंदक जमबीदवसवहल, टवस.6, छव. 4, 1994, चच.6, डब्ठ नदपअमतेपजल चतमे.